भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 22 अंक : 5 | बुधवार, 26.5.99 | वार्षिक चंदा : 50.00

प.पू. काकाजी की जयंती के अवसर पर.....

ओहो! 12 जून.....अनिर्देश के अलगारी फकीर अर्थात् प.पू.काकाजी की जयंती का महामंगलकारी दिन.....

- प.पू. काकाजी यानि-प्रभु की मूर्ति मौज में बांटने वाला अनिर्देश का शाह सौदागर!
- प.पू.काकाजी यानि-जीवों के कल्याण के लिए अक्षरधाम से आया चिदाकाश का निरपेक्ष मूर्तिमान फरिश्ता!
- प.पू.काकाजी यानि-योगी के अल्प संबंध वालों के लिए बुद्धू बनकर लुट जाने वाला माहात्म्य का महासागर!
- प.पू. काकाजी यानि-बृहद् गुणातीत समाज की अद्भुत इमारत स्थापित करके स्वयं तैयार किए ज्योर्तिधरों को चाबी सौंप देने वाले अनोखे जिंदादिल चैतन्यशिल्पी!
- पू.पू. काकाजी यानि-मैत्रीभाव व सर्वदेशीयता का पैगाम देने वाली दिव्य विभूति!
- प.पू.काकाजी यानि-जिसके द्वारा गुणातीत साधुता धरती पर साक्षात् जीवंत रही है!
- प.पू.काकाजी यानि-जिन्हें आखिरी सांस तक योगी का सपना पूरा करने की एकमात्र तान-अनुसंधान! गुरुभक्ति व दासत्वभक्ति का बेनमून मूर्तिमान स्वरूप!
- प.पू.काकाजी यानि-वचनामृत व स्वामी की बातों के आधार पर ही गुणातीत ज्ञान की गंगा बहाने वाले गंगासागर!
- प.पू. काकाजी यानि-सभी के व्यवहार में खूब रसबस दिखाई देते हुए भी भीतर से अति अलिप्त-अलमस्त चैतन्यजननी!
- प.पू. काकाजी यानि-जिन्हें ना कोई अपना था-ना कोई पराया, किंचिति भी राग-द्वेष, मेरा-तेरा, महत्वाकांक्षा, भेदभाव, खींचातानी या आग्रह नहीं। स्वभाव-प्रकृति, गुण-दोष का कोई भार नहीं। बस केवल संबंध की महिमा!
- प.पू. काकाजी यानि-जिन्हें अपना कोई निजी स्थान नहीं। फिर भी जहां वे गए वहीं सब उन्हें अपनी जान से अधिक प्यारे!
- प.पू. काकाजी यानि-जो सर्वज्ञ, समर्थ प्रभुधारक विभूति होते हुए भी भक्तों के दास!
- प.पू. काकाजी यानि-जो कभी अपनी बलभरी वाणी से, करूणाभरी आँखों से, स्नेहभरे धब्बे से छाती पर हाथ फेर कर, तो कभी कड़क स्वभाव ग्रहण करके, सौहार्दपूर्ण व्यवहार से, भजन व संकल्प से एवं व्यावहारिक मुश्किलों में संबंध वालों के साथ खड़े रह कर उन्हें प्रभु की राह पर अग्रसर करने जीवन की आखिरी क्षण तक लगे ही रहे-लगे ही रहे!
- प.पू. काकाजी यानि-जो स्थूलरूप से भले अन्तर्धान हुए,लेकिन अभी भी दिल की सच्चाई से पुकार करने वाले चैतन्यों की परवरिश करने हर प्रकार से सहाय करने एक सुरक्षा कवच बन कर सदैव तत्पर!
- शब्दों से जिनकी महिमा आंकी ना जा सके और वाणी चुप हो जाए, पर हमारे भीतर में जिन्होंने एक अद्भुत अनुभूति करवाई-ऐसे भक्तवत्सल हमारे प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी की जयंती! उनके बारे हम कितना भी लिखें-महिमा गाएं, पर जब तक उनके द्वारा दिए गए मूलभूत सिद्धांतों की ओर हमारी सतत् नज़र नहीं होगी तब तक हमारी पूर्णाहूति भी तो नहीं होगी.....प.पू. काकाजी ने

सत्पुरुष से संबंध करके सुखी होने के कई आसान तरीके बताए.....

- आईये, हम सब प.पू.काकाजी द्वारा 1975 में करी गई अत्यंत मार्मिक निम्न कथावार्ता के एक-एक शब्द को गहराई से समझने का प्रयास करें और भीतर में अंर्तदृष्टि करें कि हमने सत्पुरुष के साथ ऐसे समर्पण का संबंध दृढ़ किया है ?
- कई बार हम अपनी गल्ती को सुधारने की बजाय उल्टा स्वरूप पर ही दोष थोपते हैं। दावा करते हैं कि हमने इतना-इतना किया, पर हमारे व्यावहारिक या आध्यात्मिक काम क्यों नहीं हुए ? हमारे स्वभाव-प्रकृति क्यों नहीं टले ? पर, असल में तो सत्पुरुष के साथ संबंध दृढ़ करने में हमारा ही खोखलापन-प.पू.काकाजी के शब्दों में केबल में ही लीकेज होती है। यह कथावार्ता हमारे सभी सवालों का जवाब हैं।
- तो, अब कृतनिश्चयी होकर, जब से जगे तब से सुबह मान कर अपने ढाँचे के मुताबिक प्रगट सत्पुरुष के साथ एक संबंध जरूर दृढ़ कर लें और सच्चे अर्थ में प.पू. काकाजी की जयंती मनायें।

पाँच प्रकार के समर्पण

प्रभु को सही मायने में समर्पित होना वही सच्चे सेवक की परम पवित्र फर्ज है। सभी शास्त्र और हर एक धर्म के अवतार पुरुषों ने प्रभु को समग्रभाव से समर्पित होकर उस परमतत्व की प्रेमपूर्वक आराधना करनी-उसे ही सच्ची भक्ति कही है। चाहे फिर वह किसी भी तरीके से हो-सखाभाव से,सखीभाव से, वात्सल्यभाव से, दासभाव से या मधुरभाव से-लेकिन उन सभी की जड़ में सनातन स्वरूप के साथ अनन्यभाव से एक विशिष्ट आध्यात्मिक संबंध अनिवार्य बताया है।

भजन के, आराधना के,प्रेमपूर्वक जुड़ने के या समर्पण के मुख्यतः पाँच प्रकार हैं। पहला प्रकार मछली के बच्चे समान भजन का है। लेकिन, जैसे ज्वार-भाटे दौरान या पानी की प्रचंड लहरों के कारण जल से अलग होते ही (मछली की) मृत्यु होती है, वैसे विपरीत परिस्थिति या प्रसंग से ऐसे भक्त का अनुसंधान टूटने पर प्रभु के स्वरूप से संबंध टूट जाएगा-संबंध रहेगा नहीं।

दूसरा प्रकार बन्दर के बच्चे का है। यहां बच्चा माँ को पकड़ ही रखता है-उसे चिपके ही रहना पड़े, वर्ना तो अलग होते ही खाई में गिर जाए और मृत्यु को पाए। इसी तरह सेवक यहां स्व-प्रयत्न से या खुद के बल से भगवान के प्रगट स्वरूप की निष्ठा टिका रखने का प्रयत्न करता रहता है। लेकिन प्रसंगों की एकधारी लगातार विषमता में या अतिविपरीत परिस्थिति में निष्ठा का बल टूट जाने पर सत्संग से गिर जाने की संभावना रहती है।

सो, इससे बढ़िया तीसरे प्रकार का-बिल्ली के बच्चे का मार्ग है। यहां माँ ही बच्चे को पकड़े रख कर,सात घर घुमा कर बच्चे की आँखें खोल कर उसे खेलता कर देती है। बच्चा खाली म्याऊँ-म्याऊँ ही करता रहता है। लेकिन (माँ के) पकड़े रहने पर यदि इधर-उधर हिलेडुले तो बिल्ली के पकड़ टाईट करने पर उसे दाँत लग जाता है। इसलिए **ऐसे समर्पण में सरलता से ही वर्तना पड़ता है।**

महाराज ने हम पर खूब दया करके ऐसे पवित्र गुणातीत पुरुषों का जोग दिया है-संबंध करा दिया है। तो हमारी जिम्मेदारी है कि बिल्ली के बच्चे के समर्पण के इस मार्ग को अपनाएँ। यानि कि-हमें उन्हें खुश करने का प्रयत्न ही करा करना है और महिमा ही गाया करनी है। हम मोहताज़ हों, लेकिन संत को कभी मोहताज़ ना करें। तो हमारी हर प्रकार की सारी जिम्मेदारी ऐसे संत की है। **ऐसा सेवक यदि भगवान के प्रगट स्वरूप के साथ बहुत सरलता से वर्ते और अनुवृत्ति के मुताबिक की निर्दोषबुद्धि युक्त सेवा करता रहे तो संत उसे थोड़े ही समय में उत्कृष्ट स्थिति पर पहुँचा देते हैं।**

लेकिन, इस प्रकार के समर्पण में समकक्षा के साथीदारों के साथ उसे समूह में जीना नहीं आता। इसलिए हमारे लिए-बुद्धिप्रधान या भावनाप्रधान मनुष्य के लिए-इससे भी अधिक अच्छे चौथे प्रकार का-मुर्गी के बच्चे जैसे के मार्ग को उत्तम प्रकार के समर्पण का मार्ग गिना जाता है। यह मान्यता नहीं, लेकिन हकीकत हैं। शुद्ध मुमुक्षु,
सिद्ध पुरुषों के नहीं-लेकिन ऐसे संत के जोग में आने पर-
बुद्धिमत्ता से नहीं, लेकिन दिल की सच्चाई से
व
अनादि काल के मन के कपट और लुच्चेपन को छोड़कर, मानसकि प्रमाणिकता से,
कोई सिद्ध के लिए नहीं, लेकिन केवल प्रभु मिलन के लिए

ऐसी तीव्र तमन्ना रखता हो
या
उस परमतत्त्व की अनुभूति करने की तन्मयता वाली आराधना करता हो या आसक्ति रखता हो, तो-
चौथे प्रकार का मुर्गी के बच्चे जैसा समर्पण बिल्कुल सरल और शक्य बन जाता है।

स्वामी की बात प्र. 3 की 31 के मुताबिक वृत्ति से, दृष्टि से या मुर्गी की तरह पास रख कर ऐसे परम एकांतिक पुरुष सभी सेवकों का एक साथ सेवन करके ग्रुप में सुहृद्भाव से वर्तना सिखा कर निर्दोष बनाते हैं-स्वतंत्र बनाते हैं और जीतेजी सुखी कर देते हैं। (मुर्गी के बच्चों को यदि देखेंगे तो वे हमेशा अपनी माँ के इर्दगिर्द ग्रुप में ही घूमते-फिरते दिखाई पड़ेंगे, क्योंकि मुर्गी उनको यही सिखाती है।) बिल्ली या कुत्ते यदि मुर्गी के बच्चे को परेशान करने आ भी जाएं, तो मुर्गी खुद ही सामना करके अपने बच्चों की रक्षा करती है। यूं बाह्य या भीतर के हमलों से ऐसे सच्चे सद्गुरु भी सेवक की रक्षा कर लेते हैं। **ऐसी शुद्ध भावना में थोड़ी देर भी कोई टिक पाएं तो सच्चे सद्गुरु सेवक का जतन करके उसके ढेर पाप सम्पूर्णतया निर्मूल कर डालते हैं-खाक कर देते हैं।** इस तरह अनंत पतित जीवों को यूं संबंध से जीवंत एवं जाग्रत, श्रद्धावान, मुमुक्षु और पवित्र बना कर जीवनमुक्त बनाते हैं।

और.....**पाँचवें प्रकार के श्रेष्ठ समर्पण में स्वेच्छा से मर-मिटने वाले शूरवीर पुरुष के समर्पण** का लक्षण है। सच्चे सत्पुरुष के प्रसंग में आनेपर ऐसे **शुद्ध मुमुक्षु को यह अपने आप सहज ही सिद्ध होता है-करना नहीं पड़ता।** गुरु भी अद्भुत, तो ऐसा शिष्य भी अद्भुत! यहां **सेवक संत को खुद का मन संपूर्ण सौंप देता है। खुद का कोई भी आग्रह नहीं, ठहराव नहीं, कोई निजी राग नहीं, खुद की महत्वाकांक्षा नहीं।** लेकिन, **केवल दिव्यभाव सहित वह संत की मर्जी में ही निरंतर वर्तता रहता है। जब तक किसी का भी चुभे-अभाव आए, भावफेर हो या बेसुरा लगे तब तक वह मन सौपा नहीं कहा जाता। जीव सौंपना और मन सौंपना ये दोनों चीजें अलग हैं। मन सौंपे बिना सत्पुरुष की प्रसन्नता फिसलती नहीं।** महिमा समझ कर केवल विश्वास रख कर मन सौंपना वही सच्चा व श्रेष्ठ समर्पण है। **ऐसे सेवक के हृदय में आनंद अखंडित रहता है। मन सौंपा यानि अखंड दिव्यभाव! ऐसा सेवक हर एक प्रसंग पर 'तूं ही-तूं ही' करा करता है। फिर ऐसे सेवक को प्रभु बुद्धियोग देते हैं। तब वह चौबीस घंटे संत की मर्जी में ही वर्तता है...वह प्रभुमय बन जाता है। मन सौंपने पर एक निराकार अवस्था का प्रारंभ हो जाता है और फिर दिव्य संबंध और अधिक दृढ़ होता जाता है। फिर मैं और तू की भूमिका उड़ जाती है और ऐक्य प्रगट होता है।**

ऐसे शुद्ध मुमुक्षु को भगवान ढूँढ रहे होते हैं। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज-ऐसे दिव्य विभूतिपुरुष-मानवरूप में यूं विचर कर गए। हर एक को उसकी कक्षा पर मूर्ति देकर गए और अपना लहु बहा कर करूणा से व भगवान हमारे सुख-दुख में भागीदार यूं हमारे व्यवहार में भी शामिल हुए। हमारे स्वभाव को भी प्रेम से अपना कर, बाहर निकाल कर, अत्यंत क्षमावान बन कर, सह करके निर्मूल किया। ऐसे अतिसमर्थ पुरुषों की तो बात ही अनोखी!

पाँचवें प्रकार का ऐसा समर्पण शुद्ध मुमुक्षु का तत्काल जीवन परिवर्तन कर सकता है। स्वामी की बात में कहे मुताबिक योगी बापा कई बार कहते कि-गाय है वह बछड़े के लिए दूध छोड़ती है, वैसे शिष्य यदि गुरु को मन सौंप दे, तो गुरु प्रसन्नता बहा देता है और अंतःकरण का अज्ञान टाल देता है।

अंतःकरण का अज्ञान क्या? **जब तक खुद की आत्मा को ब्रह्मस्वरूप नहीं माना जाता, तब तक अज्ञान है। जब सत्पुरुष को मन सौंप दे यानि कि बड़े पुरुष की अनुवृत्ति पालें और वो जो कहें वैसे करें तब वह अज्ञान निकाल देता है।**

स्वामी की बात में कहा है कि –कोई सर्वस्व अर्पण कर दे ऐसा हो, कोई देह को नहीं गिने ऐसा हो और इन्द्रियों-अंतःकरण को भी ना गिने ऐसा हो, लेकिन तीन प्रकार के देह के भाव को ना गिने ऐसा नहीं मिलता। ये बातें दिल में टिके-जमे और ''मैं ब्रह्मरूप हूँ ही'' यूँ मानना पक्का हो तब निर्विघ्न रूप से अक्षर के भाव को पाएंगे। **जीतेजी जी मरना सीखे और मरने तैयार हो उसे यह बात सिद्ध कर सकती है। यूं ब्रह्मस्वरूप संत के साथ ब्रह्मरूप से जुड़ना-वही अंतिम कक्षा का समर्पण है।** सो ही अ.मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने स्वामी की बात प्र. 11 की 167 में अद्भुत व भव्य बात करी कि-**आज ही ऐसा आत्यंतिक स्वरूप ज्ञान सिद्ध हो सके**

ऐसा है। * लेकिन, हम सब की कमनसीबी है कि उनकी इस अपरिमित करुणा, उनके आग्रह, उनके उस दिव्य प्रेम का संबंध हम पहचान नहीं सकते। उनके प्रेम को झेल नहीं सकते। फिर भी वे करुणासागर हमें निभाते हैं। आगे लेते हैं और सीढ़ी के मार्ग पर कदम-कदम, धीरे-धीरे जीव की कक्षा के मुताबिक शुद्धिकरण करके ब्रह्मरूप का पक्का करा देते हैं, फिर जीव में बैठ जाते हैं।

यह वारसा अभी भी कायम ही है। तो, हम सभी ऐसा अद्वितीय आध्यात्मिक संबंध दृढ़ कर लें और अखंड वर्तमान में ही रह कर अक्षरधाम के अखंड सुख का, शांति का, आनंद का बल का लाभ उठा लें।

इसी को ही माना जाए-अत्यधिक सच्चेभाव से सत्संग किया और तभी प्रारब्ध और प्रकृति बदल जाकर सुख-सुख से जीवनमुक्त दशा का, ऐसी स्वतंत्रता का, निर्दोषता का आनंद प्राप्त करके अन्य को भी दे सकते हैं। हर रोज इस रहस्य की बात का अनुसंधान रख कर, जब खाली हों तब जुगाली करने की लगनी लगा दोगे, तो इस मंगलकारी अवस्था में अखंड रहते हो जाओगे और संबंध में आने वाले को भी उतना ही सुखी कर पाओगे। जीतेजी ही अक्षरधाम की यही सच्ची प्राप्ति है। तो, सभी सिद्ध कर लें यही अभीप्सा!

-1975 में प.पू. काकाजी महाराज द्वारा करी कथावार्ता

* प.पू. काकाजी खुद भी मर्म में कई बार बोलते कि-आध्यात्मिक ज्ञान का दाता आज तुम्हारे सामने सोफे पर बैठा है।

निमंत्रण

सपिरवार मित्रमंडल सहित
आइये.....
अनिर्देश के शाह सौदागर यानि-
ब्र.स्व.प.पू.काकाजी महाराज का
81वाँ प्राकट्य दिन दिल्ली मंदिर में
दिनाँक 13 जून 99 रविवार की
शाम को 6.30 से 9.00 मना कर
पुरुषोत्तम मास के साथ-साथ
एक महिने के अनुष्ठान शिविर की
पूर्णाहुति करें
और
स्वयं को धन्य करे.....

-योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 1.6.99 मंगलवार - प.पू.पप्पाजी का दृष्टा दिन, गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(2) दि. 10.6.99 गुरुवार - एकादशी, व्रत
(3) दि. 12.6.99 शनिवार - ब्र. स्व.प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन जो कि 13 जून 99 रविवार शाम को 6.30 से 9.00 दिल्ली मंदिर में मनाया जाएगा।
(4) दि. 23.6.99 बुधवार - भगवान स्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
(5) दि. 24.6.99 गुरुवार - भीम एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'Bhagwatkripa' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393